CLASS-16: Summary

1. सूत्र चौदह **पद्म-महापद्म-तिगिंछ- केशरि- महापुण्डरीक-पुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि** में हमने जाना कि कुलाचल पर्वतों के ऊपर ह्रद होते हैं
    - यानि बहुत बड़े-बड़े तालाब, सरोवर

2. इनके नाम हैं
    - पहले हिमवन पर **पद्म**
    - दूसरे महाहिमवन पर **महापद्म**
    - तीसरे निषेध पर **तिगिंछ**
    - चौथे नील पर **केशरी**
    - पाँचवें रुक्मि पर **महापुण्डरीक** और
    - अंतिम शिखरी पर **पुण्डरीक**

3. इन सरोवरों के नाम उसमें रहने वाले कमलों के नाम के **आधार से** पड़ गए हैं
4. मुख्यतः ये नाम **रुढ़ी से** यानि अनादि काल से हैं
    - और जो व्यवस्था अनादि से है उसमें कोई कारण नहीं होता
    - जैसे भरत क्षेत्र का नाम भरत चक्रवर्ती के नाम पर है यह मुख्य कारण नहीं है
    - मुख्य कारण है कि यह अनादि काल से ही भरत क्षेत्र है

5. हमने जाना की आज लोग **रुढ़ि शब्द** का गलत अर्थ लगाते हैं
    - कि इसका आशय परम्परा से या कोई रुढ़ियों से धर्म का पालन करना होता है

6. जबकि रूढ़ि का मतलब है जो उसी रूप में चला आ रहा हो
7. इसका आशय
    - अनादि कालीन शब्दों से,
    - अनादि कालीन व्यवस्थाओं से,
    - अनादि कालीन संरचनाओं से है

8. हमने जाना कि इन आकृतिम रचनाओं के स्वरूप पर विश्वास होना ही सम्यग्दर्शन का कारण है
9. **करणानुयोग सम्बन्धी** सम्यग्ज्ञान और श्रद्धान के लिए लोक में जो भी चीजें जिस ढंग से व्यवस्थित हैं, उन्हें उसी रूप में जानना
    - इस पर श्रद्धा बिना सम्यग्दर्शन अधूरा है
    - यह सम्यग्ज्ञान की एक परीक्षा करने का एक अंग है

10. इसके लिए हमें अपनी बुद्धि को विश्राम देना पड़ेगा
    - और जैसा कि आचार्य श्री कहते हैं, **बुंदेलखंड के लोगों** की तरह **'हओ'** कहना भी सीखना पड़ेगा

11. हमें श्रद्धान करना होगा कि
    - अनादिकाल से बने पद्म सरोवरों के पर्वत भी अनादिकाल से ऐसे ही मणियों और रत्नों से खचित तट वाले हैं
    - हर पर्वत आगामी की लम्बाई-चौड़ाई दूसरे पर्वत की अपेक्षा उसकी दूनी या आधी बताई है
    - जैसी कर्मभूमि, भोगभूमि बताई गई हैं वे वैसी ही हैं

12. दिमाग में प्रश्न नहीं उठने चाहिए
    - कि अनादिकाल से ये सब कैसे चल सकता है
    - बिना किसी ईश्वर, ब्रह्मा, निमित्त के?

13. ज्यादा बुद्धि लगाने से doubt ही होगा और interest नहीं आएगा
    - क्योंकि यह **बुद्धि का विषय नहीं** है
    - बुद्धि का काम है कि सूत्रों और शास्त्रों के माध्यम से हम इनको जानलें
    - सन्देह करने से यह बुद्धि में जाना बन्द हो जाएगा

14. आचार्य समन्तभद्र महाराज ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा है
    - जो निस्संदेह होकर जानता है वही सम्यग्ज्ञान है
    - जैसा है उसको वैसा ही स्वीकार करो
    - अतः बुद्धि को निस्सन्देह बनाओ

15. सूत्र पंद्रह - **प्रथमो योजन सहस्रायामस्तदर्ध विष्कम्भो ह्रदः** में हमने छः कुलाचल पर्वतों के बीचों-बीच में बने हुए ह्रद के विस्तार के बारे में जाना
16. यह सभी पर्वत पूर्व-पश्चिम दिशा में लम्बे फैले हुए हैं
17. इसका आयाम पूर्व-पश्चिम में एक हजार योजन है
    - यह इसकी लम्बाई है

18. आगे हम इन ह्रदों के बारे में विस्तार से जानेंगे